वैश्विक महामारी कोविड–19 के काल में भारतीय शिक्षा

Indian Education in the Period of COVID-19 Pandemic

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

वैश्विक महामारी कोविड–19 के काल में भारतीय शिक्षा

Indian Education in the Period of COVID-19 Pandemic

सम्पादक

डॉ0 धीरज सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग,

मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,

मोहन नगर, गाजियाबाद।

नमूना SAMPLE

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

दिल्ली (**भारत**)

प्रकाशक



अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

हेड ऑफिस : ए–108, स्ट्रीट न0. 1/3,
कौशल पुरी, दिल्ली–110094 (भारत)

Phone : 9643620664, 8744955183
E-mail : adhyayapublishers@gmail.com,
adhyayapublishers@yahoo.com
Website : www.adhyayabooks.com

वैश्विक महामारी कोविड–19 के काल में भारतीय शिक्षा

संस्करण : 2021

© **सम्पादक**

ISBN: 978-81-952607-8-2

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक एवं सम्पादक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

वीरेन्द्र कुमार यादव 'अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के द्वारा प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

समर्पण



मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम की अनन्य भक्त,
सच्ची साधक, तेजस्वी तपस्विनी परम श्रद्धेय काकी चन्द्रकान्ति
देवी की
स्नेहिल व ममतामयी स्मृति में सादर समर्पित
जो अगस्त, 2011 में आध्यात्मिक शिखर पर पहुँच कर
ब्रह्मलीन हो गईं।

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

सम्पादकीय

वर्तमान युग विज्ञान का युग कहा जाता है। आज मानवीय सभ्यता विकास के उस पायदान पर खड़ी है जहाँ मनुष्य चाँद पर पहुँच चुका है, मंगल पर भी अपने मंगल यान उतार चुका है, सूरज पर चढ़ाई करने की तैयारियां कर रहा है, ऊर्जा के कुछ वैकल्पिक स्रोतों की खोज कर चुका है और कुछ अन्य वैकल्पिक स्रोतों की खोज सतत कर रहा है, जल–थल और नभ को अपनी मुट्ठी में करते हुए द्रुत गामी परिवहन के तथा सूचना संचार के साधनों का निर्माण कर चुका है, परमाणु हथियारों से सृजन और विनाश का द्वन्द भी लड़ रहा है। इंटरनेट के माध्यम से पूरी दुनिया भौतिक सीमाओं की दहलीज पार कर एक गांव के रूप में सिमट चुकी है। आज के परिदृश्य में भौतिक दूरियां महत्वहीन बन चुकी हैं। लेकिन मानवीय सभ्यता के विकास की इस कहानी में मनुष्य की संघर्षशीलता और जिजीविषा की महती भूमिका रही है। उसने अपनी सृजनशीलता और कल्पनाशीलता को साकार रूप देते हुए विश्व के आँगन को अपनी सर्जनाओं से सुशोभित किया है।

आज विश्व का जो वैभवशाली स्वरुप हमारे समक्ष उपस्थित है वह मनुष्य की उसी प्रतिभा, क्षमता, जुझारूपन और कर्मशीलता का परिणाम है। किन्तु मानवीय सभ्यता के विकास की इस वैभव गाथा में अनेक अवरोध भी समय–समय पर आये जिन्होंने मानवों की विकास यात्रा के पहिए को रोकने का प्रयास किया। ये अवरोध कभी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में तो कभी बीमारी व महामारी के रूप में तो कभी मानवों के व्यक्तिगत स्वार्थ व लोभ के परिणाम स्वरुप युद्धों के रूप में

हमारे समक्ष उपस्थित हुए जिसका दुष्परिणाम समस्त मानव जाति को भुगतना पड़ा। मानवीय विकास यात्रा के इन व्यवधानों में बीमारियों व महामारियों की मानव सभ्यता को पीछे खींचने में व्यापक भूमिका रही है। इन में बीमारी व महामारी जैसी आपदाओं से जूझते हुए मानवों ने सदा अपने विकास का मार्ग प्रशस्त किया है।

कितनी ही आपदाओं और संघर्षों को परास्त करते हुए आज मानवीय सभ्यता विकास के जिस मुहाने पर खड़ी है वहां से अतीत के संघर्षों का अनुमान लगाना कठिन है। किन्तु यह भी सत्य है कि बिना संघर्ष के विकास की यात्रा पूर्ण भी नहीं होती। संघर्ष ही जीवन पथ को संवारते हैं, निखारते हैं, विस्तीर्ण व निष्कंटक बनाते हैं। विस्तृत राजमार्ग पर तो सभी सरलतापूर्वक विचरते हैं किन्तु जीवन का मार्ग सदैव राजपथ से ही नहीं निकलता है। कुशल जीवन के लिए अँधेरी, सँकरी, धूल, धुन्ध व काँटों भरी पगडंडियों से भी गुजरना पड़ता है। जो इन कठिन रास्तों को बिना किसी विषाद के तय करता है, सफलता, सम्मान व समृद्धि उसे गले लगाते हैं। और जो मनुष्य इनसे विचलित हो कर डर जाता है उसे जीवन में नैराश्य, असफलता व उपेक्षा का दंश मिलता है। संघर्ष ही जीवन है। संघर्ष है तो जीवन है और जीवन का आनन्द है। संघर्ष से ही जीवन में अनुभव जुड़ते हैं और जीवन जीने की कला आती है।

आज सम्पूर्ण विश्व एक संकट से जूझ रहा है। इस संकट का कारण है एक अति सूक्ष्म विषाणु के द्वारा फैलने वाला संक्रमण जिसे हम सभी कोरोना के नाम से जानते हैं। आज पूरे विश्व में कोरोना वायरस बुरी तरह से फैल चुका है। अब कोरोना एक संक्रामक बीमारी न रह कर महामारी का रूप धारण कर चुका है। विश्व के लगभग समस्त देशों में यह अपने पैर पसार चुका है। कोरोना के संक्रमण को रोकने के लिए वैश्विक स्तर पर रोकथाम के उपाय किए जा रहे हैं। इन उपायों में सर्व प्रथम व सर्व प्रमुख उपाय था सामाजिक दूरी का अनुपालन करना, भीड़–भाड़ वाले स्थलों से दूर रहना, किसी भी प्रकार के सामजिक सम्मेलनों से स्वयं को दूर रखना आदि। इस बात को ध्यान में रखते हुए विश्व के अधिकतर देशों ने कुछ निश्चित शर्तों एवं मानदंडों

के आधार पर लॉक डाउन घोषित किया था। कुछ देश इस वायरस के प्रकोप से उबर रहे हैं तो कुछ अभी उबरने का प्रयास कर रहे हैं।

कोरोना ने दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर से अपनी दस्तक दी थी। वहां से निकल कर कोरोना तेजी से सम्पूर्ण विश्व में फैल गया था। अब लगभग एक वर्ष बीत जाने के बावजूद इसके मामले आना बंद नहीं हुए हैं। अब विश्व के अनेक देशों ने इसका टीका बना लेने की घोषणा भी कर दी है और कहीं–कहीं टीकाकरण की प्रक्रिया भी प्रारम्भ हो चुकी है। लेकिन जो 2020 का एक वर्ष का अंतराल रहा वह सम्पूर्ण विश्व के लिए कठिनाई पूर्ण रहा। इस वायरस के प्रकोप को रोकने के लिए वैश्विक स्तर पर जो कठोर कदम उठाए थे उससे लोगों का जीवन दुश्वार हो गया था। इस एक वर्ष का काला अनुभव उनके पूरे जीवन के स्मृति संसार में अपना विशिष्ट स्थान बनाए रखेगा।

हमारे देश में कोरोना के मामले जनवरी से आना प्रारम्भ हुए थे। केंद्र सरकार ने सतर्कता बरतते हुए 25 मार्च 2020 से 21 दिनों का प्रथम लॉक डाउन घोषित किया था। उसके पश्चात लॉक डाउन को चरणबद्ध तरीके से बढ़ाते हुए तीन अन्य लॉक डाउन घोषित किए गए थे जो 31 मई 2020 को पूरे हुए। उसके पश्चात सरकार ने चरणबद्ध तरीके से अनलॉक की प्रक्रिया 1 जून 2020 से प्रारम्भ की। अनलॉक का सातवां चरण 31 दिसम्बर को पूरा हुआ। अनलॉक की इस प्रक्रिया में धीरे–धीरे बन्दी की प्रक्रिया में ढील देते हुए मानव जीवन को पटरी पर लाने के लिए प्रयास किए गए। देश की बिखरती अर्थ व्यवस्था को सँभालने, व्यापार में हुई गिरावट को रोकने, बंद उद्योग धंधों और को पुनः चलाने जिससे लोगों की जीविका चल सके एवं सामान्य जनों के बदहाल जीवन में सुधार लाने के लिए अनलॉक आवश्यक भी था।

कोरोना के कारण किए गए लॉक डाउन के कारण काफी चीजें खुल गईं और सामान्य जीवन धीरे–धीरे पटरी पर आने लगा है किन्तु इस दौरान भारत की बिगड़ी हुई शिक्षा व्यवस्था पटरी पर नहीं लौटी है। मार्च 2020 के मध्य से ही सभी शिक्षण संस्थान बन्द घोषित किए थे। सभी प्रकार की परीक्षाएं चाहे प्रवेश हेतु हों या सत्रांत परीक्षा,

मूल्याँकन कार्य, प्रवेश प्रक्रिया, कक्षा शिक्षण का संचालन आदि सभी कुछ रोक दिया गया। शिक्षण संस्थानों की बंदी की प्रक्रिया दीर्घकालिक हो गई। अनलॉक में कुछ शर्तों के साथ परीक्षाएं हुईं, प्रवेश भी हुए ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से शिक्षण कार्य भी पुनः प्रारम्भ हुआ किन्तु विद्यालय नहीं खुले।

कोरोना के इस काले कालखंड में भारतीय शिक्षा व्यवस्था ने अनेक रंग देखे। अनेक बदलाव भी हुए। भारतीय शैक्षिक जगत में इस दौरान कई ऐसी स्याह कहानियां देखने व सुनने को मिली जिन पर यकीन कर पाना मुश्किल था। कई ऐसे उजले पक्ष भी दिखे जिसके सकारात्मक प्रभाव आगे आने वाले समय में शिक्षा व्यवस्था का मार्गदर्शन करते रहेंगे। ऐसी आपदा काल में भारतीय शिक्षा ने अनेक परिवर्तनों को स्वीकार करते हुए स्वयं को संभाला और संजोया। पूरी तरह से ध्वस्त हो चुकी शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को पटरी पर लाते हुए भारतीय शिक्षकों ने पुनः मुरझाए विद्यार्थियों के चेहरे पर उल्लास बिखेर दिया। कोरोना के इस कठिन काल में सरकारी सेवारत शिक्षकों को विशेष समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ा किन्तु प्राइवेट विद्यालयों एवं स्ववित्त पोषित महाविद्यालयों शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के लिए यह अपने जीवन काल का सबसे बुरा दौर साबित हुआ। फिर भी इस स्याह दौर में ये शिक्षक अपने कर्तव्य पथ से विचलित हुए बिना अपने कार्य में लगे रहे और कोरोना के कारण शिक्षण–अधिगम के बदलाव के इस दौर के साक्षी बने। इन शिक्षकों ने ऑनलाइन माध्यमों से शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया को सुचारु बनाया। कुछ नया सीखने की ललक के साथ भारतीय शिक्षकों ने इस दौर को भी पार कर रहे हैं। इस प्रकार कोरोना महामारी के कारण भारतीय शैक्षिक जगत में अनेक परिवर्तन हुए और शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया ने इन बदलावों को आत्मसात करते हुए अपनी गति बनाए रखी।

कोरोना महामारी के कारण शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के स्वरुप में हुए बदलाव, भारतीय शिक्षा व्यवस्था और शिक्षकों पर पड़ने वाले प्रभाव एवं ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को मिली गति व प्रोत्साहन को ध्यान

में रखते हुए **'वैश्विक महामारी कोविड–19 के काल में भारतीय शिक्षा'** शीर्षक से पुस्तक का सम्पादन किया जा रहा है। इस पुस्तक में विभिन्न विद्वानों, शिक्षकों और शोधार्थियों ने कोरोना काल के अपने अनुभवों को शोध आलेख के माध्यम से साझा किया है। इस पुस्तक में देश के विभिन्न भागों से प्राप्त कुल 32 लेखों को शामिल किया गया है जिसमे 17 शोध आलेख हिन्दी भाषा में एवं 15 शोध आलेख आंग्ल भाषा में लिखे गए हैं। इस प्रकार यह पुस्तक कुल 32 आलेखों की संचयिका होगी।

अपने आलेख के माध्यम से सहयोग देने के लिए सभी लेखकों को धन्यवाद और आभार। विभिन्न लेखकों के उपरोक्त विषय में अभिव्यक्त इन विचारों को पुस्तकाकार रूप देने के लिए अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स का भी धन्यवाद एवं आभार। प्रस्तावित विचार को पुस्तकाकार रूप देने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बने सभी सहयोगियों व आत्मीय स्वजनों को भी हृदय से आभार सहित धन्यवाद। अपनी पत्नी डॉ. रेनू सिंह एवं अपने दोनों पुत्रों अद्वैत और अथर्व के प्रति विशेष आभार।

इस पुस्तक के माध्यम से कोरोना के शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर पड़ने वाले तात्कालिक एवं दूरगामी प्रभावों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक कोरोना महामारी के स्याह कालखंड के प्रभावों को भावी पीढ़ी से अवगत कराएगी। भविष्य में यह पुस्तक इस आपदा पर कार्य करने वाले शोधार्थियों का भी मार्ग दर्शन करने में सहायक सिद्ध होगी। समकालीन घटनाओं के अध्येताओं के लिए भी यह पुस्तक रुचिकर साबित होगी। इसी विश्वास के साथ।

सम्पादक
डॉ. धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

नमूना • SAMPLE



डॉ विद्यापति
विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, शिक्षा संकाय
इविंग क्रिश्चियन परास्नातक महाविद्यालय
(स्वायत्तशासी संघटक महाविद्यालय
इलाहबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय)
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।

भूमिका

मनुष्य विधाता की सर्वश्रेष्ठ कृति है। ईश्वर प्रदत्त बुद्धि और विवेक उसे सभी प्राणियों में सर्व श्रेष्ठ बनाती है। उसकी ये सर्वश्रेष्ठता उसके सृजनात्मक कार्यों और विचारों में देखी जा सकती है। प्राणिमात्र के कल्याण हेतु समर्पित मानव जीवन सदैव उत्कृष्टता को प्राप्त करते हुए अपनी सर्वश्रेष्ठता बनाए रखता है। मनुष्य की भुजाओं और मस्तिष्क में सृजन और विनाश दोनों पलते हैं। उसकी विवेक सम्मत बुद्धि उसे क्रियाशील व विचारवान बनाती है तथा सृजनात्मक कार्यों की ओर प्रवृत्त करती है। अपनी सर्जना, क्रियात्मकता एवं संघर्षशीलता से उसने विस्तीर्ण नभ पर वायुयान चला दिए, सागर की छाती चीरने वाले विशाल जलपोत बना दिए और इंटरनेट के जाल बिछाकर भौगोलिक दूरी को महत्वहीन बनाते हुए सम्पूर्ण विश्व को एक बड़े गाँव के रूप में बदल दिया है। आज का मानव विकसित सभ्यता का प्रतिनिधि है जिसके पास नभ, जल और थल में विचरण करने की क्षमता है। पलक झपकते ही विश्व को समाप्त करने वाले परमाणु हथियार भी इसी विकसित मनुष्य की देन है।

जब विवेक बुद्धि का साथ छोड़ देता है तो बुद्धि विनाश और कल्याण का अंतर भूल जाती है। विवेक के अभाव में अहंकार आ जाता

SAMPLE

है। आज मनुष्य भी कुछ ऐसा ही हो गया है। अपनी इन उपलब्धियों के मद में चूर मनुष्य ने अपने ही विनाश के अनेक हथियार तैयार कर लिए हैं। कुछ भी सृजित करने के उसके अहंकार ने उसे प्रकृति के बेतहाशा दोहन और शोषण की छूट दे दी है, जिसका परिणाम अनेक आपदाओं के रूप में हमें समय–समय देखने को मिलता है।

आपदायें सदैव हानिप्रद होती हैं वे चाहे प्राकृतिक हों या मानव निर्मित। ये आपदाएं आने वाले समय के लिए हमें नई सीख देती हैं तथा हमारे अनुभव कोष में वृद्धि भी करती हैं। आज मानवीय सभ्यता फिर एक बार कोरोना वायरस से फैलने वाली संक्रामक बीमारी जो अब महामारी का रूप ले चुकी है, से ग्रस्त है। कोरोना महामारी एक आपदा के रूप में हमारे देश में भी फैल गई है। इस महामारी की चपेट में भारत का प्रत्येक प्रान्त और प्रत्येक शहर है। इस आपदा से हमारे देश की सम्पूर्ण व्यवस्था चरमरा गई थी। शिक्षा व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं रही है। धीरे–धीरे इस आपदा से देश उबर रहा है। लॉक डाउन और फिर अनलॉक की प्रक्रिया के फलस्वरूप देश की बिगड़ी व्यवस्था पटरी पर आ रही है। विगत एक वर्ष में भारतीय शैक्षिक जगत में भारी परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है। इस परिवर्तित हो रही व्यवस्था में शिक्षकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा है।

डॉ. धीरज सिंह द्वारा **'वैश्विक महामारी कोविड–19 के काल में भारतीय शिक्षा'** शीर्षक से सम्पादित पुस्तक में कोरोना के भारतीय शैक्षिक व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों, इसके फलस्वरूप उत्पन्न हुई चुनौतियों, समस्याओं, सृजित नवीन अवसरों, शिक्षकों द्वारा भोगी गई समस्याओं, ऑनलाइन शिक्षण आदि जैसे अनेक बिंदुओं पर देश के विभिन्न भागों के विद्वानों एवं शोधार्थियों के मौलिक आलेखों को शामिल किया गया है। इस पुस्तक में समाहित आलेखों द्वारा कोरोना कालखंड में शैक्षिक व्यवस्था से जुड़ी हुई अनेक समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक भारतीय शैक्षिक व्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर कोरोना महामारी के प्रभाव के अध्ययन एवं शोध कार्य हेतु उपयोगी सिद्ध होगी।

डॉ. धीरज सिंह को इस पुस्तक के कुशल सम्पादन हेतु शुभकामनाएं साथ ही उन सभी शोध आलेख प्रेषित करने वाले शिक्षकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों को भी शुभकामनाएं जिनके प्रयास से यह संकल्पना पुस्तक के आकार में अपना पूर्ण रूप प्राप्त कर रही है।

मंगल कामनाओं सहित.....

14 जनवरी, 2021 (मकर संक्रान्ति) **डॉ. विद्यापति**

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE



डॉ. गायत्री सिंह
प्राचार्य,
अर्मापुर पी जी कॉलेज कानपुर
एवं
अधिष्ठाता, कला संकाय,
श्री छत्रपति शाहूजी महाराज
विश्वविद्यालय, कानपुर

अभिमत

आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष कोरोना जैसी घातक महामारी नवीन चुनौती के रूप में खड़ी है। इस महामारी में मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करते हुए मानवीय सभ्यता के विकास में ठहराव ला दिया है। हमारे देश में भी अनेक समस्याएं इस महामारी के कारण उत्पन्न हुई। किन्तु जैसे–जैसे समय बीत रहा है इस आपदा से देश उबर रहा है। कुहासा जो कोरोना के कारण छाया हुआ था, छंट रहा है। देश की व्यवस्थाएं धीरे–धीरे सुचारु रूप में आ रही हैं। जन–जीवन सामान्य हो रहा है।

इस आपदा की घड़ी में हमारे देश की शैक्षिक व्यवस्था भी लड़खड़ा चुकी थी। यह कालखंड ऐसे अनेक बदलावों का साक्षी बना जिसकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होगी। भारतीय शिक्षा व्यवस्था ने इस आपदा की चुनौती को स्वीकार किया और इन विपरीत परिस्थितियों में भी राष्ट्र के नौनिहालों के भविष्य सँवारने की जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। किन्तु सामान्य दिनों की भाँति विद्यार्थियों का विद्यालय जाना अभी भी सम्भव नहीं हो पा रहा है। ऑनलाइन कक्षाएं एक विकल्प के तौर पर उभरी हैं। प्राइवेट शिक्षण संस्थानों के शिक्षक कोरोना जनित परिस्थितियों में बुरी तरह से उलझ गए हैं। इसी प्रकार अभी भी अनेक

SAMPLE

समस्याएं इस आपदा के कारण उभर कर सामने आई हैं जिनके समुचित समाधान हेतु सतत विचार मंथन चल रहा है।

इन्ही उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए सहज व सरल भाषा में लिखे जिज्ञासु विद्वतजनों के आलेखों की संचयिका **''वैश्विक महामारी कोविड–19 के काल में भारतीय शिक्षा'** नामक शीर्षक की पुस्तक का अवलोकन करने पर इस चुनौतीपूर्ण समय में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया की समस्याओं, अवसरों, संभावनाओं एवं समाधान के विषय में विविध प्रस्तुत विचारों से अवगत होने का अवसर मिला।

डॉ. धीरज सिंह ने बड़ी ही ईमानदारी और तत्परता से आगे बढ़ कर सम्पादकीय दायित्व के साथ साथ कोरोना काल में शिक्षण–अधिगम के विभिन्न पक्षों को इस पुस्तक के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। पुस्तक के विभिन्न अध्यायों के लेखकों ने अपने विवेकशील अनुभवों द्वारा कोविड–19 के विभिन्न शैक्षिक प्रभावों यथा–उच्च शिक्षा के शिक्षकों पर प्रभाव, विद्यार्थियों पर प्रभाव, मूल्यांकन पर प्रभाव, महामारी का इतिहास, ई–लर्निंग, ऑनलाइन शिक्षण पद्धति एवं इसकी समस्याएं आदि बिंदुओं पर सहज एवं रोचक ढंग से ज्ञानवर्धक रूप में लेखबद्ध किया है।

इस आपदा काल में अपने आलेख के माध्यम से सहयोग करने वाले विद्वतजनों एवं शोधार्थियों ने अपने अनुभवों को लिपिबद्ध करते हुए अपने लेखकीय दायित्व को बखूबी निभाया है। सम्पादक डॉ. धीरज सिंह ने अपने कुशल सम्पादकत्व में अपनी योग्यता का परिचय देते हुए देश के अलग–अलग भागों से प्राप्त आलेखों को गम्भीर, उपयोगी व रुचिकर पुस्तक का रूप दिया है। यह हम सभी के लिए हर्ष एवं संतोष का विषय है। विभिन्न विद्वतजनों एवं सम्पादक के गहन अध्ययन और बुद्धिमत्तापूर्ण लेखन से सुसज्जित यह पुस्तक अध्येताओं के लिए ग्राह्य, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगी, मेरी यही अनुशंसा है।

डॉ. गायत्री सिंह

सहायक–सूची

1. **डॉ. धीरज सिंह,** विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहननगर, गजियाबाद, उत्तरप्रदेश।
2. **डॉ. नीरज कुमार सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, चौधरी चरण सिंह पी जी कॉलेज हेवरा, इटावा।
3. **डॉ. अनामिका सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, ग्राम्यांचल महाविद्यालय, हैदर गढ़, बाराबंकी।
4. **डॉ. अजिता सिंह** तिवारी, सहायक प्राध्यापक, एम.एड. विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली।
5. **शरद गंगवार,** पूर्व छात्र (एम.एड.), बरेली कॉलेज, बरेली।
6. **डॉ. समता सिंह,** टी0 जी0 टी0 हिन्दी, दिल्ली पब्लिक स्कूल, कल्याणपुर, कानपुर।
7. **डॉ. अजय कुमार शर्मा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, गवर्नमेण्ट डिग्री कॉलेज, राजौरी।
8. **डॉ. जितेन्द्र कुमार पयासी,** असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, उंचेहरा।
9. **डॉ. किरन जोशी,** सहायक अध्यापक, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहननगर, गजियाबाद, उत्तरप्रदेश।
10. **डॉ. नवीन अग्रवाल,** सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य संकाय (लेखा और विधि), किशोरी रमन (पी.जी.) कॉलेज मथुरा।

SAMPLE

11. **डॉ. शैलेश कुमार पाण्डेय,** असिस्टेन्ट प्रोफेसर (बी0एड0 विभाग), एम.डी.पी.जी.कालेज, प्रतापगढ़।
12. **डॉ. मनीषा सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।
13. **डॉ. अरविन्द कुमार कुशवाहा,** अतिथि असि0 प्रोफेसर, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, चौधरीमहादेव प्रसाद (सी0 एम0 पी0) पी0 जी0 कॉलेज, एम0 जी0 मार्ग0, प्रयागराज।
14. **डॉ. रीता तिवारी,** अतिथि प्रवक्ता, वाणिज्य विभाग, राजकीय महाविद्यालय, उंचेहरा, सतना, मध्य प्रदेश।
15. **डॉ. नीलम मिश्रा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, उंचेहरा।
16. **सुविद्य धारवाडकर,** छात्र, हिंदी विभाग, पार्वतीबाई चौगुले कला एवं विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त) मड़गांव–गोवा भारत।
17. **स्वतन्त्र कुमार,** (सहायक अध्यापक), बेसिक शिक्षा परिषद् प्रयाग. राज, (उत्तर प्रदेश)।
18. **Dr. Dheeraj Verma (Soni),** Principal Amritum T.T. College Batawadi Teh. Anta Dist. Baran Rajasthan.
19. **Dr. Vandana Sharma,** Assistant Professor, Dept. of English, J.K.P.P.G.College, Muzaffarnagar.
20. **Rathindra Narayan Das,** Asstt. Professor, Department of Education, Pranabananda Women's College, Lumding.
21. **Nayan Basu,** Asstt. Professor, Department of Education, Pranabananda Women's College, Dimapur.
22. **Dr. Ruchi Bajpai,** Assistant Professor, Aryavart Institute of Higher Education , Lucknow.
23. **Dr. Reena Agarwal,** Assistant Prof., Ganpati Institute of Science and Technology, Mohan Nagar, Ghaziabad.
24. **Gourab Das,** Assistant Professor, Department of Commerce, Vidyanagar College.

SAMPLE

25. **Ushoshi Ganguly,** Post-Graduate (Commerce) Student, St. Xavier's University, KOLKATA, Action Area IIIB, Newtown,Kolkata 700160, West Bengal.
26. **Sovik Mukherjee,** Assistant Professor in Economics, Faculty of Commerce and Management, St. Xavier's University, KOLKATA, Action Area IIIB, Newtown, Kolkata 700160, West Bengal.
27. **Mr. Ravi Kant Verma,** Assistant Professor, Education Department, Modern College Of Professional Studies, Mohan Nagar, Ghaziabad.
28. **Ms. Juti Das,** Assistant Lecturer, Department of Education, BMBB COMMERCE COLLEGE, Patgaon, Assam.
29. **Jusmita Gogoi,** Research Scholar, Department of Education, Dibrugarh University, Assam.
30. **Anil Kumar,** Assistant Professor, DAV University, Jalandhar.
31. **Sakshar Saha,** Assistant Professor, Department of Pharmaceutical Technology, JIS University, Kolkata, West Bengal.
32. **Ahana Dey,** Student, Department of Pharmaceutical Technology, JIS University, Kolkata, West Bengal.
33. **Monihar Pervin,** Student, Department of Pharmaceutical Technology, JIS University, Kolkata, West Bengal.
34. **Shri. Arjun S. Jadhav**, (Researcher), Asst.Teacher, Dept. of Physics, Kisan Veer Jr. College, Wai, Tal-Wai, Dist-Satara,Maharashtra ,412803.
35. **Prin. Dr. V. S. Nalawade,** Azad College of Education , Satara.
36. **Maria Susan Mathew,** Assistant Professor, Department Of Commerce, Henry Baker College, Melukavu, Kerala.
37. **Urna Bhattacharjee,** M.Phil Scholar, Education Department, Calcutta University.
38. **Ms. Oshin Yadav,** B.Ed. Scholar, Fairfield Institute of Management and Technology.

SAMPLE

39. **Aakash,** Bachelor of Commerce-3rd year, S. D. College, (lahore), Ambala Cantt, Haryana, Kurushetra university.

नमूना • SAMPLE

विषय–सूची

सम्पादकीय *v*

भूमिका *xi*

अभिमत *xv*

सहायक–सूची *xvii*

1. कोरोना महामारी के कारण भारतीय शिक्षकों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ एवं समस्याएं 1
—डॉ. धीरज सिंह

2. भारत में कोरोना महामारी और ऑनलाइन शिक्षण पद्धति 14
—डॉ. नीरज कुमार सिंह

3. कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण : नया प्रयोग, नया विकल्प 23
—डॉ. अनामिका सिंह

4. भारतीय शिक्षा व्यवस्था में तकनीकी उन्नयनः ऑनलाइन शिक्षा के सन्दर्भ में 34
—डॉ. अजिता सिंह तिवारी, शरद गंगवार

5. भारतीय संस्कृति एवं वर्तमान कोरोना महामारी के दौर में शिक्षक 45
—डॉ. समता सिंह

6. शिक्षा के क्षेत्र में वैश्विक महामारी (कोविड–19) के दुष्प्रभाव एवं अवसर 51
—डॉ. अजय कुमार शर्मा

SAMPLE

7. शिक्षकों के सामाजिक, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक जीवन पर कोविड–19 का प्रभाव 61
—डॉ. जितेन्द्र कुमार पयासी

8. कोरोना महामारी के दौरान भारत में ऑनलाइन शिक्षा 66
—डॉ. किरन जोशी

9. कोविड–19 का भारत की शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन एक दृष्टि में 76
—डॉ. नवीन अग्रवाल

10. कोरोना के कारण शिक्षा के क्षेत्र में उपस्थित चुनौतियां एवं अवसर 85
—डॉ. शैलेश कुमार पाण्डेय

11. कोविद–19 लॉकडाउन के दौरान शिक्षकों और छात्रों के समक्ष चुनौतियाँ 92
—डॉ. मनीषा सिंह

12. कोरोना समस्याः देश की सुरक्षा एवं राजनीतिक (छात्र संगठन) व्यवस्था पर पड़ने वाला प्रभाव 103
—डॉ. अरविन्द कुमार कुशवाहा

13. ऑनलाइन अध्ययन कार्य और गृहकार्य 111
—डॉ. नीलम मिश्रा, डॉ. रीता तिवारी

14. कोरोना महामारी और ऑनलाइन शिक्षण 117
—सुविद्य धारवाडकर

15. कोविड–19 के दौरान ऑनलाइन शिक्षण की भूमिका एवं चुनौतियाँ 127
—स्वतन्त्र कुमार

16. Effectiveness of Teaching and Learning Through a Digital Platform 137
—Dr. Dheeraj Verma (Soni)

JRFT SAMPLE

17. Online Education in the Era of Global Pandemic: New Challenges and Perspectives 145
—*Dr. Vandana Sharma*

18. Global Change and Importance of Distance Learning and E-Learning 153
—*Rathindra Narayan Das Nayan Basu*

19. Global change and Artificial Intelligence in Education 163
—*Dr. Ruchi Bajpai*

20. Covid-19 And Encounters of Rural Online Learning In India 176
—*Dr. Reena Agarwal*

21. Use of E-Learning platform in India: Issues and Challenges 184
—*Gourab Das*

22. Redefining Classrooms Amid The Pandemic: Is the Paradigm Shift to Online Education a 'Boon' or 'Bane' in the Indian Context? 193
—*Ushoshi Ganguly, Sovik Mukherjee*

23. Impact of Covid-19 on Education Sector 201
—*Mr. Ravi Kant Verma*

24. Virtual Platform in Teaching and Learning During Covid-19 Pandemic 211
—*Ms. Juti Das*

25. Impact of Covid-19 on Education: Challenges and Opportunities 219
—*Jusmita Gogoi*

26. Effective Methods of Teaching and Learning after Covid-19 225
—*Anil Kumar*

27. Historical Perspective of Pandemics 236
—*Sakshar Saha, Ahana Dey, Monihar Pervin*

28. Challenges faced by the Teachers of Primary and Secondary Education Teachers during COVID-19 250
—*Arjun S. Jadhav, Dr. V. S. Nalawade*

SAMPLE

29. COVID-19 Impact and Effects on Teaching-Learning of Higher Education Institutions 259
—Maria Susan Mathew

30. Covid-19: Challenges faced by Primary School Teachers on Light of Online Education 275
—Urna Bhattacharjee

31. Impact of COVID-19 on Online Classes & Assessment 283
—Ms. Oshin Yadav

32. Teaching-learning and COVID-19: Impact, challenges and opportunities 291
—Aakash

नमूना • SAMPLE

1

कोरोना महामारी के कारण भारतीय शिक्षकों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ एवं समस्याएं

डॉ. धीरज सिंह

शोध सारांश

आज सम्पूर्ण विश्व कोरोना जैसी घातक महामारी से जूझ रहा है। यह महामारी अब वैश्विक आपदा का रूप ले चुकी है। मानव–जीवन समाज में इस कारण अनेकों परिवर्तन हुए हैं। मानव–जीवन और समाज की दशा और दिशा में आमूल–चूल परिवर्तन हो चुका है। कोरोना की परिस्थितियों में जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया है। भारत भी इन परिस्थितियों से अछूता नहीं है। इस समय भारत में लॉकडाउन का चौथा चरण पूरा हो चुका है। लॉकडाऊन के कारण यहाँ सड़कें खाली हैं, गलियां सूनी हो गई हैं, सभी औद्योगिक इकाइयां बंद पड़ी हैं, बाजार, दुकानें, मॉल, सभी प्रकार के शॉपिंग काम्प्लेक्स, जिम, सिनेमाहाल, स्विमिंग पूल, सैलून आदि बंद पड़े हैं। मजदूरों का गाँवों की ओर पलायन हो चुका है। करोड़ों लोग नौकरियां छिन जाने के कारण बेरोजगार हो चुके हैं।

SAMPLE

शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। स्कूल, कॉलेज, और विश्वविद्यालय सभी बंद हैं। विद्यार्थी घरों में कैद हैं। सभी प्रकार की सैद्धांतिक व प्रायोगिक परीक्षाएं स्थगित हैं। मूल्यांकन प्रक्रिया, प्रवेश प्रक्रिया, कक्षाओं का संचालन आदि रुक गया है। अनेक शैक्षणिक संस्थानों में शिक्षकों वेतन रोक दिया गया है या वेतन का कुछ प्रतिशत काटकर दिया गया है। प्राइवेट शिक्षण संस्थानों में कार्य करने वाले अनेक शिक्षकों और शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को कार्य मुक्त कर दिया गया है।

आज शिक्षा जगत भी इस महामारी की चपेट में बुरी तरह से फँस चुका है। इन विपरीत परिस्थितियों में नवाचारी शिक्षकों ने हार न मान, उपस्थित चुनौतियों का सामना करते हुए शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए नित नवीन आधार सृजित किया और शैक्षणिक गतिविधियों को सुचारु ढंग से संचालित किया। कोरोना–काल में समाज के समक्ष यदि नई चुनौतियां उपस्थित हुई हैं, कई रास्ते बंद हुए हैं तो अनेक नए रास्तों का निर्माण भी हुआ है और नवीन अवसर व संभावनाएं भी मिली हैं। समय है इन संभावनाओं को पहचान कर इन्हे अवसरों में बदलने की।

भूमिका

आज कोरोना महामारी ने वैश्विक परिदृश्य परिवर्तित कर दिया है। कल्पना से परे घटनाएं घट रही हैं। लोगों की दिनचर्या, खान–पान, तौर–तरीके आदि में भारी परिवर्तन दिखाई दे रहा है। समाज का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जो इस प्रभाव से बच पाया हो। शिक्षा भी इस प्रभाव से बच नहीं पाई है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुचारु ढंग से संचालित करने की जिम्मेदारी शिक्षकों की होती है। भारतीय समाज में शिक्षकों का स्थान सदा से ही महत्वपूर्ण माना जाता रहा है। शिक्षक सृजन का कारक, मानवीय मूल्यों का संरक्षक, विस्तारक व प्रचारक, विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता का प्रणेता, समाज और राष्ट्र का प्रमुख स्तम्भ होता है। उसका कार्य मात्र कक्षा में शिक्षण करना ही नहीं वरन उसके कार्य के परिधि अति व्यापक है। विद्यार्थी के संतुलित, सर्वांगीण व सर्वतोन्मुखी विकास के साथ ही वह लोक मानको को स्थापना भी अपने मानकीय व्यवहार व व्यक्तित्व से करता है। वह विद्यार्थियों के लिए

पूजनीय व अनुकरणीय तथा समाज के लिए आदरणीय होता है। एक ओर वह चाणक्य बन कर चन्द्रगुप्त का सृजनकर्ता है तो दूसरी ओर महान मगध शासक घनांनद जैसों के विनाश की शक्ति भी रखता है। उसके भीतर प्रलय लाने और रोकने जैसी दोनों क्षमताएं विद्यमान होती हैं। वह द्रोणाचार्य बन अर्जुन जैसा धनुर्धर और भीम जैसा महान गदाधारी तैयार करता है तथा अपमान के प्रतिशोध हेतु पांचाल जैसे शक्तिशाली राज्य को हस्तगत भी कर सकता है।

विपरीत परिस्थितियां उत्पन्न होने पर शिक्षक उनसे संघर्ष करता है तथा नित नए नवाचारों को जन्म देते हुए परिस्थितियों को अनुकूल बनाता है। आज कोरोना महामारी के बढ़ते प्रकोप के चलते समस्त शिक्षण प्रक्रिया बाधित हो गई है। वैश्विक स्तर पर उत्पन्न हुई इन परिस्थितियों में समाज के प्रत्येक जिम्मेदार नागरिक के समक्ष अनेक चुनौतियाँ और समस्याएं खड़ी हो गई हैं। शिक्षक भी इस महामारी में अनेक समस्याओं और चुनौतियों से घिर गया है। प्रस्तुत आलेख में शिक्षकों के समक्ष उत्पन्न हुई चुनौतियों और उन चुनौतियों के बीच जन्म ले रही संभावनाओं का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

शोध आलेख का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध आलेख में कोरोना महामारी के दौरान शिक्षकों (विशेषकर प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत) के समक्ष जो चुनौतियां उत्पन्न हुई है, उनका वैश्लेषिक अध्ययन करना है।

शोध आलेख का शीर्षक

शोध आलेख का शीर्षक है–**कोरोना महामारी के कारण भारतीय शिक्षकों के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ एवं समस्याएं**।

कोरोना काल में शिक्षकों के समक्ष चुनौतियाँ

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता होता है। एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन व आगे आनेवाला भविष्य गढ़ता है। वह एक स्वस्थ समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक समाज व राष्ट्र का मार्गदर्शन किसी न किसी रूप में करता रहता है। इसीलिए

भारतीय समाज में शिक्षक को सर्वोच्च स्थान दिया जाता है और–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुर्साक्षात परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

का उद्घोष करते हुए पूजनीय माना जाता है। अपने विद्यार्थी, समाज और राष्ट्र पर आये हुए संकटों का वह समाधान खोजते हुए उनके चतुर्दिक विकास का मार्ग प्रशस्त करता है। शिक्षक हमारे समाज का वह हिस्सा है जिसके बिना राष्ट्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योकि माता–पिता के पश्चात शिक्षक ही वह व्यक्ति होता है जो अपने विद्यार्थियों में समाज व राष्ट्र की आवश्यकता के अनुरूप उनके हृदयों में कल्पनाओं का सृजन करते हुए उन्हें साकार रूप देने का प्रयत्न करता है, उनके व्यक्तित्व में रंग भरते हुए उनमे निखार लाता है तथा भावी जीवन के लिए उन्हें तैयार भी करता है। शिक्षक ही हैं जिन्हें हमारी भारतीय संस्कृति में माता–पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है। इसलिये ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है। गुरु या शिक्षक का सम्बन्ध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है और उसका हाथ थामने के लिए हमेशा तैयार रहता है।[1]

शिक्षक का कार्य चुनौती पूर्ण होता है। उनके दायित्यों का निर्वहन करना अत्यंत कठिन होता है। एक शिक्षक एक मार्गदर्शक, मित्र, परामर्शदाता, दार्शनिक, प्रशिक्षक, ज्ञानदाता, सलाहकार, परीक्षक और गुरु है। वह शीलवान, प्रज्ञावान और करुणावान आचार्य है, जो अध्ययन करता है, स्वयं यथोचित आचरण करता है और दूसरों को आचरण करने के लिए प्रेरित करता है। वह व्यापक अध्ययन कर अनुभवयुक्त ज्ञान देता है, जीवन निर्माण के लिए बुद्धिमता प्राप्त करने में सहयोग करता है। वह गुरु है जो अँधेरा दूर करता है। वह गुरुतापूर्ण और महान है।[2] आज कोरोना जैसी महामारी ने शिक्षकों की इन चुनौतियों को और बढ़ा दिया है।

SAMPLE

रोजगार का संकट

देश में 25 मार्च, 2020 से लॉकडाउन लगा था जो क्रमिक रूप से चार चरणों में (प्रथम 25 मार्च से 14 अप्रैल–कुल 21 दिनों के लिए, द्वितीय 15 अप्रैल से 3 मई–कुल 19 दिनों के लिए, तृतीय 4 मई से 17 मई तक–कुल 14 दिनों के लिए और चतुर्थ 18 मई से 31 मई तक–कुल 14 दिनों के लिए)[3] चला। इसमें कुछ सहूलियतें दी गई और देश को पटरी पर लाने के लिए आर्थिक गतिविधियां प्रारम्भ की गई। आज अनलॉक 2.0 चल रहा है जो 31 जुलाई तक पूरा होगा। देश के समस्त शैक्षणिक संस्थान लगभग 16 मार्च, 2020 से बंद कर दिए गए थे। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सभी विश्वविद्यालयों की परीक्षाएं 31 मार्च तक स्थगित करने को निर्देशित किया था। सीबीएससी और आईसीएससी ने भी सारी परीक्षाएं पहले 31 मार्च, 2020 तक स्थगित की थी जो अब 1 जुलाई तक के लिए स्थगित कर दिए गए थे।[4] इससे सरकारी संस्थानो के शिक्षकों के रोजगार पर अंतर नहीं पड़ा किन्तु देश की शिक्षा में 90 से अधिक योगदान देने वाले प्राइवेट शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षक इस स्थिति में बहुत प्रभावित हुए हैं। अधिकतर विद्यालयों में विद्यालय बंद होने की स्थिति में अपने शिक्षकों को नौकरी से निकाल दिया। अधिकतर विद्यालय प्रबंधतंत्र ने मार्च 2020 से अभी तक शिक्षकों के वेतन निर्गत नहीं किये हैं। यदि बहुत से संस्थानों ने वेतन निर्गत भी किए हैं तो 30 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत तक वेतन काटकर निर्गत किए हैं। शहरों और छोटे कस्बों के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का और भी बुरा हाल है। अनेकों संस्थान लगभग बंद हो गए हैं क्योंकि वहां पढ़ने वाले बच्चे लॉकडाउन के कार अपने अभिभावकों के साथ अपने गांव लौट चुके हैं। बहुत से शिक्षक भी नौकरी छोड़ कर अपने गांवों की ओर पलायन कर चुके हैं। इसके पश्चात देश में अनलॉक की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इसमे कुछ सहूलियतें दी गई और देश को पटरी पर लाने के लिए आर्थिक गतिविधियां प्रारम्भ की गई।

आज अनलॉक 2.0 चल रहा है जो 31 जुलाई तक पूरा होगा। देश के समस्त शैक्षणिक संस्थान लगभग 15 मार्च, 2020 से बंद चल

रहे हैं। इससे सरकारी संस्थानो के शिक्षकों के रोजगार पर अंतर नहीं पड़ा किन्तु देश की शिक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक योगदान देने वाले प्राइवेट शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षक इस स्थिति में बहुत प्रभावित हुए हैं। अधिकतर विद्यालयों में विद्यालय बंद होने की स्थिति में अपने शिक्षकों को नौकरी से निकाल दिया। अधिकतर विद्यालय प्रबंधतंत्र ने मार्च 2020 से अभी तक शिक्षकों के वेतन निर्गत नहीं किये हैं। यदि बहुत से संस्थानों ने वेतन निर्गत भी किए हैंतो 30 प्रतिशत से लेकर 50 प्रतिशत तक वेतन काट कर निर्गत किए हैं। शहरों और छोटे कस्बों के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का और भी बुरा हाल है। अनेकों संस्थान लगभग बंद हो गए हैं क्योंकि वहां पढ़ने वाले बच्चे लॉकडाउन के कारण अपने अभिभावकों के साथ अपने गांव लौट चुके हैं। बहुत से शिक्षक भी नौकरी छोड़ कर अपने गांवों की ओर पलायन कर चुके हैं।

मानसिक तनाव में वृद्धि

कोरोना के कारण समाज में अधिकतर जनसँख्या मानसिक तनाव के दौर से गुजर रही है। चिंता, तनाव, अवसाद सामान्य स्थितियों में भी होता है. पर, दो–चार दिन में खत्म हो जाता है। लंबे समय से चलने वाले लॉकडाउन की वजह से लोगों के भीतर नकारात्मक मनःस्थिति ठहर सी गई है। यह नकारात्मक स्थिति जितने लंबे समय तक रहेगी मानसिक स्थिति उतनी ही ज्यादा खराब होती जाएगी।[5] भविष्य में आने वाली परिस्थितियों का अनुमान लगाना कठिन हैं किन्तु शैक्षणिक संस्थानों में कार्यरत शिक्षक मानसिक उत्पीड़न के शिकार हो रहे हैं। नौकरी जाने का खतरा उन्हें हर क्षण प्रतीत होता रहता है। ऐसे में उनका मानसिक तनाव बढ़ता ही जा रहा है। ऑनलाइन कक्षाएं भी शिक्षकों के तनाव का एक बड़ा कारण हैं। अनेकों शिक्षक इस तनाव को नहीं बर्दाश्त कर पा रहे हैं और कुंठा तथा मानसिक अवसाद का शिकार हो रहे हैं। आए दिन शिक्षकों के आत्महत्या की खबरें आ रही हैं। जिन्हे बेहतर संस्थान में जाने के लिए नौकरी में बदलाव चाहिए था या जो फ्रेशर के रूप में अपना कैरियर शिक्षक के रूप में प्रारम्भ करने वाले थे, वे अब ऐसा बिलकुल नहीं सोच सकते क्यों कि विद्यालयों ने

नई नियुक्तियां बंद कर दी हैं। कई शिक्षक स्वयं इस तनाव को बर्दाश्त न कर पाने और अवसाद से उबरने के लिए अपनी नौकरियां छोड़ दे रहे हैं।

तकनीकी संसाधनों पर निर्भरता और तकनीकी साधनों के उपयोग के विषय में समुचित ज्ञान का अभाव लॉकडाउन के कारण आज समाज में तकनीकि साधनों पर लोगों की निर्भरता बहुत बढ़ गई है। विद्यालयों ने लॉकडाउन के समय शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुचारु बनाने के लिए ऑनलाइन कक्षाएं प्रारम्भ की जो पूर्णतः तकनीकि आधारित है। बहुत से शिक्षक साथी ऐसे हैं जो आज टेक्नोलोजी के उपयोग में दक्ष नहीं हैं। बहुत से ऐसे शिक्षक हैं जिनके पास आवश्यक तकनीकी साधनों का भी अभाव है जो ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करने के लिए आवश्यक है। ऐसे में वे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में अपना सहयोग नहीं दे पा रहे हैं।

भारत के 27 प्रतिशत विद्यार्थी शहरी क्षेत्रों से हैं शेष विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और बिजली की उपलब्धता बहुत कम होने के कारण ऑनलाइन कक्षाओं का विकल्प सबके लिए उपयोगी नहीं हो रहा है। इन क्षेत्रों के अभिभावक, शिक्षक और विद्यार्थी तकनीकी रूप से इतने समृद्ध नहीं हैं कि ऑनलाइन कक्षाएं एक विकल्प के रूप में सर्वग्राह्य हो सके।

ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावक जिनके बच्चे सरकारी पाठशालाओं में पढ़ने जाते हैं, जो मिड डे मील और सरकारी अनुदानों पर आश्रित हैं उन विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन कक्षाएं कैसे संभव हैं जबकि वे हर प्रकार से संसाधन विहीन हैं। ऐसे में शिक्षक कर भी क्या सकते हैं।

जहाँ ऑनलाइन कक्षाएं संचालित हो रही हैं वहां मोबाइल लगातार प्रयोग में आने के कारण उसमे अनेक समस्याएं जैसे– मोबाइल का गर्म हो जाना, चार्जिंग न लेना, चार्ज न हो पाना, मेमोरी का भर जाना, चार्जर का खराब हो जाना आदि आ रही हैं। इस कारण शिक्षकों को अतिरिक्त मोबाइल, लैपटॉप, कैमरा, चार्जर आदि खरीदना पड़ रहा है।